RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 10 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 11 अगस्त 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

आलम (दरचों)
लाते
दांग्तो वासी

त्यौहारों के साथ लोकोत्सवों का सीजन आ चुका है देवभूमि में

कार्यालय प्रतिनिधि

भारी बरसात के साथ ही त्यौहारों का सीजन शुरू हो चुका है। देवभूमि उत्तराखण्ड में त्यौहारों के साथ लोकोत्सवों की धूम मचने लगी है। आने वाले सितम्बर माह में तो आयोजनों की भरमार है।

लोक परम्पाओं अनुसार अपने इष्ट देव के के पूजन से पूर्व होने वाली तैयारियों के लिये ग्रामीण जुटे हैं। आलम (दरचो) लाते सीमान्तवासी, रामलीला की तालीम में जुटे कलाकार, नन्दाष्टमी की तैयारी में जुटे लोग, रक्षाबन्धन त्यौहार, जन्माष्टमी के आयोजन की रूपरेखा सहित अन्य आयोजन होने वाले हैं।

चम्पावत जिला मुख्यालय के प्रसिद्ध बालेश्वर मन्दिर में श्रीमद्भागवत कथा, गंगोलीहाट के कालिका मन्दिर में महा शिवपुराण का भव्य आयोजन किया गया। लोहाघाट के बाराकोट विकासखण्ड में बिशंग के कोट महरा गांव में 22 दिवसीय देवी जागर का विशाल आयोजन हुआ। गुमदेश क्षेत्र के चमदेवल चौखाम बाबा मन्दिर में 11 दिवसीय शिव महापुराण जारी है। चौखुटिया के जाबर तड़गताल में मन्दिर परिसर में मन्दिर मेला समिति की बैठक में नन्दादेवी मेले की तैयारी को लेकर बैठक हुई।

जोगेश्वर धाम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पार्थिव पूजन करवाया है। रुद्रप्रयाग के ऊखमठ ब्लाक के सारी ग्राम में ग्वाल (ग्वाल बाल) देवता का विशेष पूजन हुआ। लोगों ने अपने घरों से दूध, दही, घी, मक्खन व रोट आदि सामग्री का भोग लगाकर मन्नतें मांगी। केदारनाथ धाम में बद्रीकेदार मन्दिर समिति की ओर से आपदा तथा यात्रा के दौरान दिवंगत हुए तीर्थ यात्रियों की आत्म शान्ति व जन कल्याण को लेकर श्रीमद् भागवत पुराण सप्ताह का आयोजन किया गया। बेरीनाग में नागपंचमी की पूजा नाग मन्दिर में हुई।

2026 में होने वाली नन्दा राजजात यात्रा की तैयारियां भी होने लगी है। सीएम ने अपने आवास पर बैठक करते हुए इसके लिये निर्देश दिये हैं।

भारत के मीलपत्थर

रामकथा का अभिन्न अंग बन चुकी हैं श्रमणी शबरी

सूर्यकान्त बाली

शबरी ने ऐसा क्या किया कि रामकथा का एक अभिन्न अंग बन गई? शम्बूक के कुछ स्वतन्त्र सन्दर्भ ही हमारे देश के बाकी उपजीव्य ग्रन्थों में मिल पाते हैं, अन्यथा जितने विशिष्ट व्यक्तियों को निरूपण हमने आत तक किया है, उन सबके अनेक सन्दर्भ हमारे इतिहास में मिल जाते हैं। पर एक शबरी है कि जिनका कोई सन्दर्भ कहीं नहीं, कोई संकेत कहीं नहीं, पर भारत की इतिहास यात्रा का एक ऐसा महत्वपूर्ण पड़ाव है शबरी कि उनके बिना हमने कोई रामकथा पूरी होते नहीं देखी। मजेदार यह है कि हर रामकथा में शबरी का सन्दर्भ थोड़ा सा ही है, पर है जरूर। दूसरी मजेदार बात यह है कि अगर रामकथा का विकास कई तरह से हुआ है तो शबरी के चरित्र का भी विकास हुआ है, हालाँकि यह विकास बहुत थोड़ा ही हुआ है। मसलन शबरी के चरित्र में भक्ति का जितना अंश वाल्मीकि रामायण में है, उसका तो भरपूर विकास हुआ है। शबरी के साथ एक बात यह जुड़ चुकी है कि उन्होंने राम को बेर खिलाए थे और यह पक्का करने के लिए कि बेर मीठे हैं, शबरी ने खुद चखकर, पक्का करके कि फलां बेर मीठा है, फिर राम को खाने के लिए दे रही थीं। यानी शबरी राम को अपने जूठे बेर खिला रही थीं और राम बड़े मजे से उनके जूठे बेर खाते जा रहे थे। फिर यह भी जोड़ दिया गया कि बेरों को जूठा देखकर लक्ष्मण ने खाने से परहेज किया और आँख बचाकर उन्होंने बेर एक ओर फेंक दिए। फिर यह जुड़ा कि जो बेर लक्ष्मण ने फेंक दिए, वे ही बाद में जड़ी बूटी बन गए, जिसे सुँघाकर वैद्यराज सुषेण ने लक्ष्मण को मेघनाद की शक्ति से उत्पन्न मूर्छा से बचाया था। पर यह तमाम बेर प्रसंग वाल्मीकि रामायण में नहीं है और जाहिर है कि शबरी के महत्व को बढ़ाने के लिए ये कथाएँ उपकथाएँ जोड़ दी गयी हैं।

थोड़ा जड़ों तक पहुँचने के लिए वाल्मीकि रामायण के शबरी प्रसंग को संक्षेप में जान लेना जरूरी है, क्योंकि उसमें शबरी के लिए प्रयुक्त कुछ शब्द आज के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। सीता अपहरण के बाद जब राम उन्हें ढूँढते हुए भयंकर दण्डकारण्य में मारे-मारे फिर रहे थे तो पहले उन्हें मरणासन्न जटायु मिले। रावण द्वारा सीता अपहरण की सूचना देकर जटायु ने देह त्याग दी तो राम-लक्ष्मण ने उनका दाह-संस्कार किया। फिर दोनों भाइयों का सामना कबन्ध नामक राक्षस हुआ, जो सिर्फ धड़ ही था और जिसका मुँह उसके पेट में था। उसे मारा तो मरते ही व दिव्य पुरुष हो गया और उसने राम-लक्ष्मण को बताया कि पश्चिमी कोने (नैर्ऋत्य) में मतंग मुनि का आश्रम है, जहाँ मुनि लोग तो अब नहीं रहते, पर उनकी परिचारिका श्रमणी शबरी वहाँ रहती है और आपके दर्शन की उसे लालसा है।

अरयण्काण्ड के सर्ग 74 में शबरी प्रसंग है। मतंग मुनि का आश्रम दण्डकारण्य में पम्पा सरोवर के किनारे था और हमें मालूम रहना जरूरी है कि संस्कृत साहित्य में पम्पा सरोवर खास आकर्षण का केन्द्र रहा है, जिके आसपास अनेक ऋषि मुनियों ने अपने-अपने तरह-तरह के आश्रम बना रखे थे, जिनका रंग-बिरंगा वर्णन कालिदास के 'रघुवंश' महाकाव्य के तेरहवें सर्ग में मिल जाता है। उसी सरोवर के किनारे बने मतंग आश्रम में शबरी रहा करती थी। वाल्मीकि ने शबरी के लिए दो विशेषणों का खूब प्रयोग किया है- सिद्धा और श्रमणी। सर्ग 73 के श्लोक 26 में दिव्य शरीरधारी कबन्ध ने शबरी को श्रमणी कहा है- श्रमणी शबरी नाम (अरण्यकाण्ड 73, 26)। वाल्मीकि ने उन्हें 74.7 में एक बार फिर श्रमणी कहा है- तामुवाच ततो राम: श्रमणीं धर्मसंस्थिताम्। उसी अरण्यकाण्ड के श्लोक 76.6 और 74.10 में कवि ने शबरी को सिद्धा कहा है अर्थात् आध्यात्मिक उपलब्धियों के क्रम में शबरी ने कुछ मुकाम पार कर लिये थे। पर जिस तल्लीनता से वे पिछले साढ़े तेरह वर्षों से राम के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थीं, यह उनके भक्तिमती, प्रपत्तिमती होने का संकेत है और इस तरह शबरी हमारी भक्ति परम्परा का प्राचीनतम प्रतीक बनकर हमारे सामने उभर अआती हैं।

बस, इस प्रसंग का एक पहलू और भी देख लिया जाए। सिद्धा श्रमणी शबरी के आश्रम में आते ही राम ने दो श्लोकों में जो उनसे पूछा वह पढ़ने लायक है- कच्चित्ते निर्जिता विघ्ना: कच्चित्ते वर्धते तप:। कच्चित्ते नियत: कोप आहारश्च तपोधने। कच्चित्ते नियमा: प्राप्ता: कच्चित्ते मनस: सुखम्। कच्चित्ते गुरुशुश्रुषा सफला चारुभाषिणी। (74. 8-9) अर्थात हे, तपोधने, तुम्हारे सारे विघ्न खत्म हो गए हैं? तुम्हारा तप ठीक चल रहा है? क्या तुमने क्रोध और आहार पर विजय पा ली है? क्या नियमों का पालन ठीक तरह से हो रहा है? क्या मन को सुख मिला हुआ है? क्या गुरु की सेवा सफलतापूर्वक हो रही है?

जवाब में शबरी ने कहा है 'हे राम, जब आप (साढ़े तेरह वर्ष पूर्व) चित्रकूट आए थे, तभी मुझे मेरे गुरुओं ने कहा

शेष पृष्ठ 5 पर

पिघलता हिमालय

अंग्रेजी बोलना जरूरी है क्या?

उत्तराखण्ड में दूसरे राज्यों के लोगों के नाम मतदाता सूची में हटाने को लेकर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए राज्य हाईकोर्ट ने पाया कि उनके समक्ष पेश नैनीताल के एडीएम प्रशासन विवेक राय ने माना कि वे अंग्रेजी समझ तो लेते हैं लेकिन बोलने में दिक्कत होती है। नैनीताल हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जी.नरेन्द्र और आलोक माहरा की खण्डपीठ ने राज्य के मुख्य सचिव एवं जिला निर्वाचन आयुक्त को यह जांचने का निर्देश दिया कि क्या अंग्रेजी न बोल पाने वाले अपर जिला मजिस्ट्रेट स्तर के किसी अधिकारी को कार्यकारी पद का प्रभारी नियंत्रण सौंपा जा सकता है?

इस पूरे प्रकरण पर चारों ओर सवाल उठने लगे और बड़ा सवाल तो यही है कि हिन्दी भाषी स्थान पर हिन्दी नहीं बोलेंगे तो क्या बोलें? हिन्दी अंग्रेजी के समकक्ष राजभाषा है। हिन्दी में राजकाज को बढ़ावा देने की बात कही जाती है और नई शिक्षा नीति में वह सारे प्रयोग हैं कि हम अपनी भाषा को प्रोत्साहित करें। स्थानीय बोलियों को तक उत्साहित किया जा रहा है। अपनी दुदबोली को मान्यता के लिये आवाज उठ रही है।

न्यायालय का सवाल उठाना बड़ी बात इसलिये है क्योंकि उच्चतर अदालतों में अंग्रेजी का बोलबाला है। कहीं अनुवाद में गड़बड़ हो तो मूल अंग्रेजी की मान्य है। अंग्रेजी की विश्वव्यापी जड़ें देखते हुए इसकी समझ होना अच्छी बात है लेकिन हमें दुनिया के उन देशों का भी उदाहरण लेना चाहिये जो अपनी भाषा को ही प्रमुखता देते हैं। नैनीताल के एडीएम का साफ-सुथरा यह कहना भी पहला मामला है कि वह अंग्रेजी समझ लेते हैं लेकिन बोलने में अड़चन है। जब अधिकारी साफ-साफ बता रहा है तो उन्हें इस बात का दण्ड कैसे दिया जाए कि वह कमजोर है। क्या अंग्रेजी का धाराप्रवाह न बोलना दण्ड की श्रेणी में आएगा? इस पूरे फैसले को हिन्दीभाषी लोग गांठ बांधकर विचार करेंगे।

इस पूरे मामले में सुप्रीम कोर्ट से एडीएम को राहत शुभ है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बी.आर.गवई, न्यायमूर्ति विनोद चन्द्रन व न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने हाईकोर्ट के 18 जुलाई के आदेश पर रोक लगा दी।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

डिप्टी सीईओ ने जान दी

मुम्बई। महाराष्ट्र के अहिल्यानगर जिले में स्थित शनि शिंगणापुर मन्दिर ट्रस्ट का प्रबन्धन करने वाले न्यास के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी (डिप्टी सीईओ) नितिन शेटे में अपने आवास में फन्दे से लटककर जान दे दी। 43 वर्षीय शेटे की आत्महत्या के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

थाईलैंड और कम्बोडिया संघर्ष विराम

मलेशिया। मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम ने कहा कि थाइलैण्ड और कम्बोडिया तत्काल और बिना शर्त संघर्ष-विराम करने पर सहमत हैं। इसे थाइलैण्ड और कम्बोडिया के बची पांच दिन से जारी सीमा संघर्ष को रोकने में बड़ी कामयाबी माना जा रहा है।

इमरान की जमानत अर्जी पर सुनवाई टली

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने 9 मई 2023 की हिंसा के मामलों में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की जमानत अपीलों की सुनवाई को स्थगित कर दिया है। खान पिछले महीने लाहौर उच्च न्यायालय से उनकी जमानत अर्जी खारिज होने के बाद शीर्ष अदालत पहुंचे थे।

उ.कोरिया को परमाणु देश स्वीकार करे

सियोल। उत्तर कोरिया के नेता किम जोग उनकी बहन किम यो जोंग ने उत्तर कोरिया को परमाणु निरस्त्रीकरण पर कूटनीति बहाल करने के अमेरिका के इरादे को खारिज कर कहा है कि वह उनके देश को परमाणु हथियार सम्पन्न देश के रूप में स्वीकार करे।

तमिलनाडु में मां-बेटी ने पास की नीट

चेन्नई। तमिनाडु में 49 वर्षीय फिजियोथेरेपिस्ट अनुषावल्ली और उनकी बेटी ने नीट की परीक्षा उत्तीर्ण की। दोनों ने अपनी लगन व मेहनत से राष्ट्रीय पात्रका सह प्रवेश परीक्षा (नीट) को लक्ष्य में रखा था। पास करने के बाद महिला को अपने गृह क्षेत्र जिले के नजदीकी सरकारी मेडिकल कालेज में सीट मिल गई जबकि बेटी भी चिकित्सा क्षेत्र में सपना पूरा करने के लिये तैयार है।

बच्चों के प्रिय लेखक ऑल्बर्ग का निधन

लन्दन। प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक ऐलन ऑल्बर्ग का 87 वर्ष्ज्ञ की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने बच्चों के लिए ईट पीच पियर प्लम और द जॉली पोस्टमैन समेत 150 से अधिक किताबें लिखी हैं।

फसक

दाज्यू, चारों ओर ठेलमठेल हो रही ठैरी

हिसाब-किताब तो चुनाव के बाद ही लगता है बल

दाज्यू, बरसात और कचार के कारण हरिद्वार में ही रुकना हुआ। तभी पता चला कि भजाभाज हो रही है। चिल्लपों सुनकर हम सड़क पर आ गये। सोच रहे थे कि कांवड़ यात्री होंगे, पुष्प वर्षा हो रही होगी या कहीं किसी को फतोड़ रहे होंगे। दाज्यू, तभी पता चला कि मनसा देवी मन्दिर में मची भगदड़ में 8 लोगों की मौत हो चुकी है और कई घायल हो गये। हे भगवान! धर्म-कर्म के रास्ते पर यह सब क्यों होता रहता है? अब तो जाँच के अलावा हो भी क्या सकता है। मन्दिर की सीढ़ियों वाला मार्ग बन्द कर पुलिस का पहरा लगाया गया है।

दाज्यू, चारों ओर ठेलमठेर हो रही ठैरी। जिसको जैसे ठेल सको, ठेलो। पंचायत चुनाव की खुमारी भी नहीं जा रही है। अपने जग्गू दा जब से प्रधान पद पर जीते हैं, अभी तक भी नाच-गीत चल रहा है। छोलिया वाली टीम बुक करवा ली है। कह रहे थे पूरे महीने जश्न होगा। किसको क्या कहें? हिसाब-किताब तो चुनाव के बाद ही लगता है बल। पंचायत चुनाव के दूसरे चरण में मतदान के दौरान पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष पिथौरागढ़ बीरेन्द्र बोरा पर पुसिल कर्मी से मारपीट का मामला चल रहा है। पुलिस को शराब बांटने की सूचना भी मिली थी बल। बिद दा की बीबी चुनाव जीत चुकी है, अब क्या ही होगा आगे। सबका साथ सबका विकास हो जाने वाला ठैरा। दाज्यू, रामनगर के शंकरपुर बूथ पर दरोगा व विधायक के बच नोंकझोक हुई थी। विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने दरोगा पर गम्भीर आरोप लगाए कि उनका व्यवहार ठीक नहीं है। हल्द्वानी से लगे गौलापार में तो भाजपा नेता को दौड़ा-दौड़ाकर पीट दिया। भाजपा गौलापार मण्डल के पूर्व अध्यक्ष और जिला पंचायत सदस्य प्रत्याशी के पति और मुकेश बेलवाल ने पुलिस को बताया- 'भाजपा की एक नेत्री का उन्हें कॉल आया कि कुछ लोग उनके घर के पास खड़े हैं और छेड़खानी कर रहे हैं। ऐसे में वह पुलिस को सूचना देकर अपने साथियों के साथ उस दिशा में चल दिये। उस जगह दर्जनों लोगों ने वाहन में तोड़फोड़ करने के साथ ही मारपीट की।' दाज्यू, सब चुनाव चक्कर ठैरा। जिसके मन की न करो, वो अपने मन की करने लगता है। 'बेलवाल भोग आटा' की खूब चर्चा होती रही थी लेकिन मतदाताओं ने हरा दिया। उधर नैनीताल के समीपवर्ती गहलना क्षेत्र पंचायत सीट से सदस्य का चुनाव लड़ रहे प्रत्याशी सुभाष कुमार से मारपीट में 23 लोगों के खिलाफ मुकदमा चल रहा है। चुनाव परिणाम से पहले ही घमाघम होने लगी थी। बाजपुर में दो पक्षों में मारपीट में सात घायल हो गए। एक पक्ष ने दूसरे पक्ष के आठ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। चम्पावत के शक्तिपुरबूंगा सीट से भाजपा समर्थित प्रत्याशी मनमोहन सिंह से मारपीट के आरोप में चौकुनी बोरा निवासी 6 युवकों पर दंगा करने और मारपीट की धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई है। रुद्रपुर के एएन झा इण्टर कालेज में बनाए गए स्ट्रांग रूम के बाहर कांग्रेसियों ने गड़बड़ी आशंका जताते हुए पहरेदारी की की। पहले बिजली गुल होने को लेकर हंगामा भी हुआ था। दाज्यू, कई जगह तो सूची से नाम गायब होने पर मतदाताओं ने हंगामा कर दिया था। दाज्यू, चुनाव में नेता और औने-पौने जोर मारने ही वाले ठैरे। अपना बिट्टू, बुलरुवा, बबली सभी जोर मार रहे हैं........क्या किया जाए? लोहाघाट के काकोट में अज्ञात लोगों ने स्कूल में तोड़फोड़ कर दी। बाराकोट पुलिस जाँच करेगी। और हो भी क्या सकता है। पंचायत चुनाव का मौसम तो कट गया लेकिन आगे भी तो तैयारी होनी है। अनुशासन तोड़ने पर भाजपा के कई नेताओं को नैनीताल जिलाध्यक्ष ने हटा दिया। चम्पावत जिले में भाजपा की वरिष्ठ नेता किरण देवी ने टिकट न मिलने से नाराज होकर पार्टी छोड़ दी। दाज्यू, हम तभी कहते हैं कि बहुत लग्गो लिपटा नहीं होनी चाहिये। काशीपुर कुण्डेश्वरी में चुनावी रंजिश में तमंचे निकल चुके हैं। क्या कहें? जागरुक बनो।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

भूस्खलन, मलबा-बोल्डर गिरने से यात्रा प्रभावित

अतिवृष्टि से केदारनाथ यात्रा बाधित

मेलियागाड़ के कटाव से पुल को खतरा

पुनोली में आवासीय महान की दीवार गिरी

लोहाघाट पेट्रोल पम्प पर देवदार के पेड़ गिरे

बागेश्वर के नायल में सोते परिवार पर मकान गिरा

लक्ष्मेश्वर बाईपास पर पहाड़ी दरकने से खतरा

बरसात के इन दिनों में भूस्खलन और मलबा-बोल्डर गिरने से यात्रा प्रभावित है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन का ज्यादा प्रभाव है। केदारनाथ धाम जाने वाले पदैल मार्ग पर गौरीकुण्ड से सोनप्रयाग की तरफ पहाड़ी से सड़क पर बोल्डर, मलबा आने से यात्रा बाधित हो गई। मुनकटिया और गौरीकुण्ड के पास 70 मीटर तक हिस्सा पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो चुका है। वैकल्पिक पैदल मार्ग भी टूटा हुआ है। यात्रा मार्ग पर फंसे यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया और आवाजाही की व्यवस्था बनाई गई है। लेकिन इन दिनों में यात्रा कठिन ही है।

पिथौरागढ़-घाट एनएच में चमगाड़ बैंड के पास लगातार भूस्खलन हो रहा है। गुरना के समलप सड़क बदहाल होने से लोग परेशान हो चुके हैं। गंगोलीहाट के पुनौली गांव में बारिश से मनुली देवी पत्नी स्व. हरीश राम के मकान की दीवार एकाएक गिर गई। मकान क्षतिग्रस्त होने से परिवार ने केसर राम के घर में शरण ली है।

लोहाघाट शहर के चम्पावत मार्ग स्थित पेट्रोल पम्प में देवदार के दो पेड़ गिर गये। जिन्हें दमकल विभाग ने हटाया। तेज बारिश में शिवालय मन्दिर के पास स्थित पेट्रोल पम्प में यह पेड़ गिर गये।

बागेश्वर जिले के दफौट नायल गांव में तड़े चार बजे एक मकान भरभरा कर गिर गया। उस वक्त परिवार के लोग गहरी नींद में थे। इस हादसे में 47 वर्षीय रंजीत, उनकी पत्नी 33 वर्षीय नीमा देवी और उनकी 13 वर्षीय पुत्री कोमल मलबे में दब गए। तीनों घायतों को मलबे से निकाल कर जिला अस्पताल में इलाज करवाया गया। पीड़ित परिवार की दो बकरियां दब गई थीं।

अल्मोड़ा नगर के लक्ष्मेश्वर बाईपास की दरकती पहाड़ी खतरा बनी हुई है। पहाड़ी का बड़ा हिस्सा भरभरा कर गिर चुका है। दरअसल अवैध खनन के कारण यह तो होना ही था। अब पहाड़ी के आसपास घरों के लिये भी खतरा बनता जा रहा है।

नर्मदा देवी का निधन

थल। दिगर मुवानी के माकुना तोक के स्वतंत्रता सेनानी स्व.केशर सिंह बोरा की पत्नी नर्मदा देवी (87) का निधन हो गया। उन्होंने अपने आवास पर अन्तिम सांस ली। स्व.नर्मदा देवी का पि.हि. परिवार की श्रद्धांजलि

सवाल-दर-सवाल

पहाड़ से उतरने को छटपटाते रहे हैं गाँव

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

सपना तो था पहाड़ के विकास का, पहाड़ को चीरते हुए अन्तिम छोर को मुख्यधारा में लाने का, मगर राज्य बनने के 25 साल बाद क्या ये सपना पूरा हो पाया है? क्या पहाड़ की मुश्किलें कम हुई हैं? पहाड़ की जवानी और पानी क्या पहाड़ के काम आ रहा है? कुछ ऐसे ही सवाल राज्य बनने के 25 साल बाद आज भी जिन्दा है। उत्तराखण्ड की शान्त पहाड़ियों में विकास की झटपटाहट दशकों रही है, यही वजह थी कि अलग राज्य बनाने के लिए यहाँ के लोगों ने अपनी जिन्दगी और अस्मिता दोनों को ही दांव में लगा डाला। लेकिन पृथक उत्तराखण्ड में भी लगता है कि पहाड़ के सुलगते सवाल हल नहीं हो पाये हैं। आलम ये है कि 25 साल गुजरने पर भी पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी का संकट हल होने के बजाय और अधिक बढ़ा है। कुमाऊँ हो या गढ़वाल पिछले 25 सालों में सरकारी आंकड़ों के मुताबिक यहाँ के 10 पहाड़ी जिलों में 2 लाख 6 हजार से अधिक घर खाली हो गए हैं। यही नहीं, शुरूआती 8 सालों में ही पहाड़ी जिलों से 6 विधानसभा सीटें भी पलायन के चलते कम हो चुकी हैं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग जरूर गाँव में रुका है लेकिन उसके हालात भी बद से बदतर हो रहे। पहाड़ के विकास के नाम पर जिस राज्य का जन्म हुआ था उन्हीं पहाड़ों में आज ना तो डाक्टर चढ़ना चाह रहे हैं, न ही शिक्षक। नौकरशाही ने भी पिछले कुछ समय से पहाड़ों से दूरी बना ली है। उत्तराखण्ड की राजनीति ना तो दूरदर्शी रही है और ना ही यहाँ के राजनेताओं में बड़े फैसले लेना का साहस दिखा है, जिस कारण 25 सालों के सफर में भी स्थाई राजधानी और परिसम्पतियों के बंटवारे जैसे ज्वलन्त सवाल हल नहीं हो पाये हैं। नीति-निर्माताओं ने पिछले 25 सालों में ऊर्जा, हर्बल और पर्यटन प्रदेश का जुमला तो खूब उछाला किन्तु राज्य की अर्थव्यवस्था को पटरी लाने में ये जुमले नाकाम ही रहे हैं। आपदा की सबसे अधिक मार झेलने वाले प्रदेश में आपदा प्रबन्धन और पुनर्वास को लेकर कोई ठोस नीति नहीं बन पाई है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दौर में हुक्मरान इन गलतियों से सबक लेंगे और उत्तराखण्ड आन्दोलन की मूल भावना की दिशा में आगे बढ़ेगा। पहाड़ में लघु और मझले उद्योगों को बढ़ावा देकर युवाओं को घर पर ही रोजगार मुहैया कराया जा सकता है। यही नहीं, पहाड़ में पारम्परिक खेती के साथ ही हार्टिकल्चर, फ्लोरीकल्चर, पशुपालन, मौनपालन(मधुमक्खी पालन), मत्स्य पालन के जरिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार दिया जा सकता है। मगर ये तमाम योजनाएं धरातल में धूल चाटती नजर आ रही हैं।

जंगली जानवरों की समस्या और प्राकृतिक आपदा में होने वाले नुकसान के कारण लोगों का किसानी से मोहभंग हो रहा है। प्राकृतिक संसाधनों से लैस उत्तराखण्ड में बहमल्य जडी-बटियों की भरमार है। अगर हिमालयन जड़ी-बूटियों पर शोध किये जाए तो उत्तराखण्ड राज्य को हर्बल स्टेट का दर्जा मिल सकता है। यही नहीं, उत्तराखण्ड में प्रकृति ने भी अपना खजाना जमकर बिखेरा है। यहाँ प्राकृतिक और धार्मिक पर्यटन के साथ ही साहसिक पर्यटन की अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं। ऐसे में पर्यटन को बढ़ावा देकर राज्य को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के साथ ही खाली हाथों को काम दिया जा सकता है। उत्तराखण्ड में आजादी के बाद से अब तक जितना पलायन नहीं हुआ, उससे अधिक राज्य बनने के पहले 15 साल यानि 2015 तक हो चुका था। यही कारण रहा कि वर्ष 2017 में भाजपा की 2017 सरकार बनी तो पलायन आयोग का गठन किया। हालांकि पहले पाँच वर्षों में यह आयोग भी महज रिपोर्ट देने तक ही सीमित रह सका। सरकार की ओर से कुछ ठोस पहल नहीं हो सकी। वर्तमान में भी खुद पलायन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 1726 गांव पलायन के चलते खाली हो चुके हैं त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव की दहलीज पर खड़े उत्तराखण्ड में खाली होते पहाड़ के सवाल पहाड़ की भांति ही जस के तस खड़े हैं। इस समय बेशक ग्रामीण आबादी की वृद्धि दर में गिरावट और शहरी आबादी में तेज विस्तार चुनौती बनते दिख रहे हैं, लेकिन इसकी शुरुआत राज्य गठन के समय से ही हो चुकी थी। उत्तराखण्ड में ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं की आबादी अभी भी अधिक है और हिस्सेदारी निरन्तर घट रही है। वहीं, राजधानी देहरादून में यह हिस्सेदारी घटकर 35 प्रतिशत रह गई है। जबकि वर्ष 2011 की जनगणना में ग्रामीण आबादी 44 प्रतिशत थी। राज्य की भांति ही देहरादून में गाँवों में जुड़े शहरी मतदाताओं को कम कर दिया जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों में न के बराबर आबादी रह जाती है। मौजूदा समय में आबादी के दबाव में हांफ रहे शहरों में डेमोग्राफिक चेंज (जनसांख्यिकी बदलाव) को पकड़ पाना आसान नहीं। जिस तरह के डेमोग्राफिक चेंज को लेकर सरकारी मशीनरी सशंकित रहती है, उसे पहचान पाना चौतरफा पसरे शहर में आसान नहीं रहता। ऐसी ही कुछ चुनौती उत्तराखण्ड के शहरों में सामने भी है। किसी भी देश की उन्नति तभी टिकाऊ होगी जब उस देश के लोग अपनी जड़ों से जुड़े रहें। हम लोग चाहे जो भी काम करते हों क्या हम अपनी जड़ों से जुड़े हैं? क्या हम अपने उन गाँवों को जहाँ हम जन्मे, उन्हें उजड़ने से बचा पा रहे हैं। क्या हम वह शक्ति रखते हैं, जिससे हम अपने गाँवों की चहल पहल बरकरार रख सकें। क्या हम हर बात के लिए सत्ता को दोषी ठहराएंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि सत्ता के साथ-साथ हम सब भी दोषी हैं? भले ही सत्ता सबसे बड़ी दोषी हो लेकिन हम भी निर्दोष नहीं। लिहाजा, दोनों पक्षों को जागरूक होना पड़ेगा। क्या हम इतने स्वार्थी और कमजोर हो चुके हैं कि सत्ता में बैठे लोगों को सही बात मनवाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते? यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हम भी दोषी हैं।

सीधी सी बात है कि अधिकतर लोग स्वभाव से ऐसे होते हैं कि वे अपना पैत्रिक निवास नहीं छोड़ना चाहते। काम और रोजगार उन्हें ऐसा करने को विवश कर देता है। इस विवशता को दूर करने का जिम्मा सरकार का होता है। यदि सरकार इस जिम्मेदारी को अपने कन्धों पर नहीं उठाती तो सरकार की जमकर आलोचना की जानी चाहिए। यदि सरकार पलायन को थामने में असफल है तो सरकार को असफल ही कहा जाएगा। मौजूदा समय में उत्तराखण्ड के लोगों को प्रण करना चाहिए कि वे स्वयं को इतना ताकतवर बना देंगे कि सरकार पलायन के लिए व्यवहारिक कदम उठाने को तैयार हो सके। सरकार को इस कसौटी पर कसा जाए। अगर इस बैरोमीटर पर सरकार किल रहती है तो सरकार को विफल माना जाना चाहिए। केन्द्र की बड़ी-बड़ी परियोजनाएं उत्तराखण्ड में प्रगति पथ पर हैं। ऐसा माना जा रहा है कि इन परियोजनाओं के पूरा हो जाने पर पलायन पर अंकुश लगेगा। प्रतिगामी (रिवर्स) पलायन को बल मिलेगा। वैसे प्रतिगामी पलायन चल रहा है लेकिन इस प्रतिगामी पलायन में धन कमाने की इच्छा छिपी है। अपने मूल गाँवों की ओर लौटने की इच्छा नगण्य है। यह सत्य भी तो पीड़ा दायक है। यही वजह है कि सरकारें पलायन को गम्भीरता से नहीं लेंती। क्योंकि सत्ता में बैठे लोग भी तो हमारे घरों के ही हैं। वे सब जानते हैं। इसीलिए, वे लफ्फाजी का सहारा लेते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि हम स्वयं ही पलायन के दोषी हैं। पलायन किसी भी समाज के लिए घातक सिद्ध होता है। इसलिए, जो सुविधाएं और आवश्यकताएं देहरादून, हरिद्वार और ऊधमसिंहनगर में उपलब्ध हैं वही सब कुछ पलायन पीड़ित क्षेत्रों में भी होना चाहिए। जब पौड़ी गढ़वाल, अल्मोड़ा और चमोली के किसी ग्रामीण को एक दो किलोमीटर के फासले पर अस्पताल, चिकित्सक, दवाई और अन्य आवश्यकताएं उपलब्ध हो जाएंगी और उसे अपने गाँव के आसपास ही नौकरी मिल जाएगी, तो भला वह अपनी कूड़ी-पुंगड़ी और खेत-खलिहान को क्यों छोड़ेगा? मौजूदा राज्य सरकार को दाएं-बाएं की न हाँक कर यही काम करना चाहिए। ऐसे भी नौकरीशुदा लोग हैं जो पहाड़ के दूर दराज में पोस्टिंग हो जाने पर जमीन आसमान एक कर देते हैं। अपनी पोस्टिंग रूकवाने के लिए उछलकूद करते हैं। ऐसी मानसिकता के रहते पलायनवाद पर चोट कैसे होगी? तभी तो लेखक ने पहले ही लिख दिया कि हम भी दोषी हैं। केवल सरकार को आड़े हाथों लेना पूर्वाग्रह ही कहा जाएगा। सरकार ने 2017 में पलायन पर अंकुश लगाने के लिए एक आयोग की स्थापना की थी। जिसे पलायन रोकने के लिए सुझाव देने थे। इस आयोग को साफगोग्र के साथ सामने आना चाहिए और वस्तुस्थिति को स्पष्ट करना चाहिए। इस आयोग को अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी चाहिए। वरना, स्वयं को भंग करने की सिफारिश कर देनी चाहिए।

ज्योतिष की बातें- 241

17 अगस्त 2025 को सूर्य स्वराशि सिंह में प्रवेश करेगा। वहाँ पर केतु से युति भी होगी लेकिन कुल मिलाकर सूर्य अत्यन्त शुभ रहेगा। सूर्य मुख्य रूप से आत्मबल, शक्ति, स्फूर्ति, आरोग्य, सफलता, सम्मान, धनलाभ, निर्भयता, इच्छाशक्ति, पिता, यश, कीर्ति, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, प्रशासन क्षमता, पदोन्नति आदि का कारक होता है। इन्हीं विषयों में सूर्य का शुभाशुभ फल प्राप्त होता है। फलदीपिका के अनुसार सूर्य 3, 6, 10 व 11 वें स्थान पर शुभ होता है। अतः अगले एक माह मिथुन, मीन, वृश्चिक व तुला राशि के जातकों के लिए सूर्य शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशियों के लिए सूर्य सामान्य होगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी- यह पर्व भाद्रपद कृष्णपक्ष की अर्धरात्रि व चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी तिथि में मनाया जाता है। तदनुसार शुक्रवार, 15 अगस्त 2025 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जाएगा।

इस स्थायी स्तम्भ में किसी ग्रह विशेष का सामान्य फल प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, दशान्तर्दशा आदि पर निर्भर करता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 131

सोलर प्लांट का प्रकोप

एक समाचार कि राजस्थान में सोलर प्लांट लगाने के लिए 26 लाख पेड़ काटे गए अभी 38 लाख पेड़ और काटे जाने हैं। इस समय देश में सैकड़ों स्थानों पर बहुत बड़े.बड़े सौर्य संयन्त्र लगाये जा रहे हैं और इसी प्रकार लाखों करोड़ों पेड़ काटे जा रहे हैं। अभी तक सड़कें चौड़ी करने के लिए, बांध बनाने के लिए, आवासीय कालोनी बनाने के लिये, भारी उद्योग लगाने के लिए, हर शहर में एयरपोर्ट बनाने के लिये तथा अन्य बहुत से तथाकथित विकास के लिए करोड़ों पेड़ काटे जा रहे थे और अब सौर्य संयन्त्र लगाने के लिए भी जंगलों को उजाड़ना शुरू हो गया है। इस प्रकार प्रकृति पर एक नया अत्याचार शुरू हो गया है। आजकल के नेताओं की जलए जंगल और जमीन से कोई पिछले जन्मों की दुश्मनी है, ऐसा लगता है।

यदि सोलर प्लांट की बात करें तो छोटे स्तर परए घरों की छत पर भी सोलर प्लांट लगाकर उस घर की बिजली की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तो फिर सैंकड़ों मेगावाट के बड़े-बड़े प्लांट लगाने की क्या सकता है! फिर बिजली को संग्रहीत करने के लिए करोड़ों बैटरियां लग जाएगीं और प्लांट से ग्राहकों तक बिजली पहुँचाने में लगभग एक चौथाई बिजली नष्ट ही हो जाती है। इस लिये बिना किसी कारण के पर्यावरण को नष्ट करने वालों का विरोध किया जाना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

चुनाव : भाजपा अपने ही जाल में घिरी

पांखू और बेरीनाग की राजनीति में उछाल

पंचायत चुनाव में हार-जीत के कारणों को पार्टियां जांच रही हैं लेकिन यह साफ दिखाई दे रहा है कि भाजपा अपने ही जाल में घिरी हुई है। पांखू और बेरीनाग की राजनीति में उछाल आ चुका है। मेरला जिला पंचायत सीट पर भाजपा अनु.मोर्चा के पूर्व प्रदेश उपाध्य दिनेश आर्या की पत्नी की पत्नी को पार्टी टिकट न मिलने पर जो बगावत हुई उसमें भाजपा समर्थित पूनम देवी को हार का सामना करना पड़ा। थल जिला पंचायत सीट पर निर्दलीय रितिका पाण्डे ने भाजपा अधिकृत प्रत्याशी नन्दन बाफिला को शिकस्त दी। सेलापानी सीट पर निर्दलीय किरन नेगी ने भाजपा की बबीता रावल को हराया। कांग्रेस की रेखा भण्डारी तीसरे स्थान पर रही।

श्रद्धांजलि

‘सबको मुबारक होली’ के रचयिता महेशानन्द गौड़ ‘चन्द्रा’ अब यादों में

हल्द्वानी/कोटद्वार। कवि और गीतकार 87 वर्षीय महेशानन्द गौड़ ‘चन्द्रा’ का 31 जुलाई को निधन हो गया। वह हल्द्वानी में अपने दामाद आशुतोष उपाध्याय पुत्री आरती के पास थे। वह कुछ समय से अस्वस्थ्य चल रहे थे। मूल रूप से कोटद्वार (पौड़ी) के महेशानन्द जी का अल्मोड़ा में शिक्षक के रूप में बेहद सम्मान था और 1960 दशक के बीच का वह दौर जब उनके लोकप्रिय गढ़वाली गीत ‘चल रूपा बुरांस कु फूल बणि जौला’ खूब चर्चित हुआ। बैठकी होली के लिये विख्यात अल्मोड़ा में पं. ताराचन्द्र पाण्डे धूम मचा रहे थे तो गौड़ साहब की रचनाएं सदाबहार बनी थीं। ‘सबको मुबारक होली’ के रचयिता ने महफिलों को देखते हुए कई रचनाएं रच डालीं। बेहद सरल और सहज गौड़ जी की होलियों का संग्रह बाद में इनके दामाद आशुतोष ने प्रकाशित किया था। पिघलता हिमालय परिवार स्व. गौड़ को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

स्पेयर पार्ट्स की फैक्ट्री में आग

रुद्रपुर। किच्छा बाईपास रोड ओल्ड इंडस्ट्रीयल एरिया में स्थ्ति एक इलैक्ट्रानिक पार्ट्स बनाने वाली फैक्ट्री में अग्निकाण्ड से करोड़ों का नुकसान हो गया। कई घण्टों तक दमकल कर्मियों ने कार्य करते हुए आग बुझाई।

एबट माउंट में पर्यटन को बढ़ावा

लोहाघाट। जिलाधिकारी मनीष कुमार ने पबट माउंट में चल रहे विकास कार्यों को तय अवधि में पूरा करने करने के निर्देश दिये। कहा कि इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने सनराइज व सनसेट व्यू स्थल का निरीक्षण करते हुए गुणवत्ता व जल निकासी सुनिश्चित करने को कहा।

सायंकालीन कक्षाओं का संचालन हो

बाजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर महा विद्यालय में बीए बीकाम प्रथम वर्ष में प्रवेश से वंचित रहे विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए सायं कालीन कक्षाएं संचालित कर प्रवेश देने की मांग मुखर हो रही है। छात्र नेताओं ने प्राचार्य को ज्ञापन सौंपने के साथ ही अनशन पर बैठने की चेतावनी भी दी।

शैक्षणिक वातावरण पर फोकस : लोहनी

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने विवि परिसर में बैठक करते हुए शैक्षणिक और प्रशासनिक सुधारों की दिशा में ठोस कदम उठाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि विज्ञान संकाय के अन्तर्गत संचालित सभी कार्यक्रमों की मूलभूत आवश्यकताओं को शीघ्र पूरा किया जाएगा।

टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन उम्मीद

देहरादून। टनकपुर-बागेश्वर रेलवे लाइन की दिशा में प्रदेश सरकार आधिकारिक पत्र केन्द्र सरकार को भेजने जा रही है। करीब 170 किमी लम्बी इस परियोजना पर राज्य सरकार से विचार विमर्श होना है। काम शुरू होने से पहले केन्द्र ने राज्य से औपचारिक सहमति प्रदान करने को कहा है। ऐसे में अब उम्मीद फिर से है। बताया जा रहा है कि कर्णप्रयाग रेल लाइन 2026 में तैयार हो जाएगी।

आरक्षण ने बदल दिये सारे समीकरण

उत्तराखण्ड पंचायत चुनाव के क्रम में शासन द्वारा जिला पंचायत अध्यक्ष पद पर अनंतिम आरक्षण सूची जारी होते ही सारे समीकरण बदले दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेस ने आरक्षण पर सवाल उठाए हैं। अनंतिम आरक्षण के अनुसार उत्तरकाशी, टिहरी, चमोली, अल्मोड़ा अनारक्षित, पौड़ी एससी, रुद्रप्रयाग, देहरादून एससी महिला, यूएसनगर ओबीसी महिला, नैनीताल, चम्पावत अनारक्षित महिला, बागेश्वर एससी महिला पिथौरागढ़ एससी महिला होंगी।

हल्द्वानी : अतिक्रमण मामले पर दबंग बने प्रशासन से भाजपाई उलझने लगे

बहुत चुनौती है इस शहर में

खेल है नीति और राजनीति का

हल्द्वानी। महानगर के आकार से भी ज्यादा फैल चुके हल्द्वानी की राजनीति का प्रदेश पर सीधा प्रभाव है। इस बड़े शहर में दिखने और दिखाने का जो तमाशा चल रहा है, उसमें सच्चाई कितनी है यह बता पाना बहुत कठिन है। कौन नेता और कौन अधिकारी कितना ईमानदार है और जनता के बीच से कौन किसके पक्ष में कितना सही बोल रहा है, यह भी समझना मुश्किल है। फिलहाल शहर में सौन्दर्यीकरण और इसे संवारने के नाम पर जितना कुछ किया जा रहा है वह किसी को पसन्द आ रहा है और किसी के लिये मुसीबत है। अतिक्रमण हटाने के लिये प्रशासन दबंग बना हुआ है लेकिन शहर में जड़ जमा चुके उन कब्जों को नहीं देखा जा रहा है जिनकी बजह से जलभराव होता है। पुराने नाले नहीं खोल गये हैं और फुटपाथों पर कब्ज है। प्रशासन की हलचल को कैमरों में जिस अंदाज में कैद कर समाचार रूप में परोसा जाता रहा है वह भी कम रोचक नहीं है। यहाँ पर खेल चल रहा है नीति और राजनीति का। नीति जो कहती है उसके अनुसार डीएम वन्दना सिंह की प्रशंसा की जाएगी। एक महिला अधिकारी ने जिस प्रकार से अपने दायित्वों का निर्वहन किया है वह उनकी योग्यता को दर्शाता है। अब पूरे अभियान में वह भी शामिल हैं जो राजनीति को समझते हुए रुख अपनाते हैं। शहर संवारने के इस अभियान में बहुत चुनौती है। शहर से लगे बड़े नालों पर कब्जे, मुख्य मार्गों पर बिना नक्शे के निर्माण, रेलवे की जमीन पर कब्जा, पालिका की भूमि पर नजर, शहर के बीचोंबीच नहर को ढक कर किया गया कब्जा और उसमें डाली जा रही गन्दगी. .....बहुत कुछ सुधार होना है। क्या यह सब हो पाएगा या अतिक्रमण तोड़ के नाम पर हंगामा मचता रहेगा?

अतिक्रमण हटने पर हलचल तो होती ही है लेकिन काठगोदाम में मुख्य मार्ग पर पर दुर्मंजिली दुकानें तोड़ने पर जिस प्रकार से भाजपाई प्रशासन से उलझने लगे यह बड़ी बात थी। सीधा आरोप लगाया गया कि पहले सड़क चौड़ा करने के नाम पर दुकानों को तोड़कर पीछे करने और बना लेने को कहा, जब दुकान बनाकर दुर्मंजिला बनाया गया तो फिर से कार्रवाई कर दी। इससे गरीब पिसता जा रहा है। प्रशासन का कहना है कि बिना नक्शे के निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता।

नगर निगम के किरायेदार दुकानदारों ने आरोप लगाया कि वर्ष 2016 में 1.50 लाख रुपये प्रीमियम व 5 रुपये वर्ग फुट पर प्रथम तल पर दुकानें बनाने की अनुमति दी गई थी। तब रुपये नहीं थे, फिर कोविड-19 महामारी फैल गई इसलिए अब बना रहे हैं। दूसरी ओर नगर निगम अधिकारियों ने इसे सिरे से खारिज करते हुए कहा कि नगर निगम में नक्शे का आवेदन कर स्वीकृति लेनी थी और अनुमति से छह माह के भीतर निर्माण कराना था और नौ साल बाद निर्माण मान्य नहीं होगा।

विजय नाथ शुक्ल, सचिव जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण का कहना है कि सड़क चौड़ीकरण में दुकानें ध्वस्त हुई थीं इसलिए इन दुकानों को मरम्मत की छूट दी थी लेकिन इसकी आड़ में अवैध निर्माण किया गया। किसी ने भी बिना नक्शा स्वीकृति या अनुमति लिए ही निर्माण कर दिया जो कि पूरी तरह अवैध है। इस वजह से अवैध निर्माण हटाया जा रहा है। नगर आयुक्त ऋचा सिंह ने कहा कि यदि निर्माण करना था तो नगर निगम से अनुमति लेनी चाहिए थी। यह निर्माण पूरी तरह अवैध है जिसे हटाया गया।

इतना तो तय हो चुका है कि शहर सजाने के लिये जितनी धनराशि आई है जब तक वह पूरी तरह लग नहीं जाती कुछ न कुछ होते रहेगा।

सावधान! जंगली मशरूम खाने से बचें

मुनस्यारी/धारचूला। हादसों के बाद भी जंगली मशरूम खाने से स्वास्थ्य खराब होने की सूचनाएं चिन्ता की बात है। जोहार के धापा में नानी-पोती की मौत के अलावा इस प्रकार की घटनाएं बार बार दिखाई दे रही हैं। कुन्ती देवी और उनकी नातिन दीया की मृत्यु के बाद चिकित्सा व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए प्रदर्शन हुआ और बैठकें हुई लेकिन फिर वही सब हो रहा है। सभी को अपना स्वयं बचाव करना होगा क्योंकि दूरस्थ इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है और किसी घटना के बाद उसके इलाज के लिये भगवान भरोसे इन्तजाम है।

नई घटना में छलमा छिलासी गाँव में जंगली मशरूम खाने के कारण चार व्यक्तियों की स्वास्थ्य खराब हो गयां उन्हें धारचूला अस्पताल में भर्ती काया गया, जहाँ से उन्हें पिथौरागढ़ जिला अस्पताल में रेफर किया गया। प्रभावितों में सूरज वर्मा (30), सुनीता देवी, अनुराग (13), प्रियांशी (6) शामिल हैं। इन सभी ने जंगली मशरूम खाया था जिससे तबीयत बिगड़ी।

पंचायत चुनाव ने बहुतों का नशा उतार दिया

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव ने इस बार बहुतों का नशा उतार दिया। धनबल सहित बलबल को जनता समझने लगी है। फिर भी राजनीति का गणित समझना कठिन ही है। और अब तो ब्लाक प्रमुख के लिये घमासान मची है।

गदरपुर ब्लाक में प्रमुख पद को लेकर क्षेत्र पंचायत सदस्यों को अपने पक्ष में करने को लेकर दो गुटों में तनाव है, ऐसे में पुलिस तैनात है। रुद्रपुर के विधायक शिव अरोरा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस की ओर से दावेदार मनदीप कौर जो कि बुकसोरा सीट से निर्विरोध निर्वाचित हुई है, के भतीजे गगनदीप सिंह जबरन बीडीसी सदस्यों को गाड़ी में बैठा रहे थे, विरोध करने पर भाजपा कार्यकर्ताओं से विवाद बढ़ गया। उधम सिंह नगर जनपद की राजनीति में तो यह चुनाव भाजपा को बड़ा सबक दे गया है। परिणामों के बाद भाजपा को अपनी रणनीति और तरीकों में बदलाव लाना होगा क्योंकि जनता के मतों का परिणाम देखने को मिलेगा ही।

प्रदेश की ज्यादातर सीटों पर कांग्रेस सफल रही है। विधायक प्रीतम सिंह के पुत्र अभिषेक सिंह बास्तील ब्रीनाड से जिला पंचायत सदस्य बने हैं।

नैनीताल में भाजपा विधायक सरिता आर्या को बड़ा झटका लगा है। भाजपा के बागी प्रत्याशी यशपाल आर्या ने उनके पुत्र रोहित को जिला पंचायत सीट पर हराया। भीमताल में क्षेत्र पंचायत कुकना कैड़ागांव धैना सीट पर विधायक रामसिंह कैड़ा अपनी बहू को नहीं जिता पाए। मतदाताओं ने कैड़ा को बड़ा झटका दिया है। विधायक अपने भाई की पत्नी को इस सीट पर चाहते थे लेकिन सामाजिक कार्यकर्ता मदन नौलिया की पत्नी कविता इस सीट पर सफल रहीं। भीमताल विस सीट पर रामसिंह को घेरने के लिये कांग्रेस नेता हरीश पनेरू पूरी तरह जुटे हैं

गदरपुर में ब्लाक प्रमुख पद को लेकर दो गुटों में तनाव और पुलिस तैनात

विधायक प्रीतम सिंह के पुत्र अभिषेक जिपं सदस्य बने

विधायक सरिता आर्या के पुत्र को भाजपा के बागी ने हराया

विधायक रामसिंह कैड़ा को भी मतदाताओं ने झटका दिया है

अतिक्रमण हटाने गई टीम के साथ मारपीट

कोटद्वार। नगर निगम के अन्तर्गत मानपुर मोहल्ले में सड़क पर एंगल लगाए जाने की सूचना पर राजस्व विभाग की टीम ने अतिक्रमण हटाना चाहा तो उनके साथ मारपीट की गई। पुलिस में मामला दर्ज कराते हुए कहा गया हे कि विजय पाल सिंह व उसके पत्रि अक्षित सहित कुछ लोगों ने वाहन में तोड़फोड़ के अलावा मारपीट की।

बंदोबस्त प्रक्रिया में शामिल कराएं

लालकुआ। संयुक्त संघर्ष समिति ने नगर में हुई बन्दोबस्ती प्रक्रिया को त्रुटिपूर्ण बताते हुए नगर में लाइन पार, राजीव नगर, बंगाली कलोनी को चिन्हित कर बन्दोबस्ती प्रक्रिया में शामिल करने से सम्बन्धित मांग पत्र तहसीलदार को दिया। समिति के संयोजक जीवन कबडवाल के नेतृत्व में क्षेत्रवासियों ने लालकुआ तहसील में जाकर अपनी नाराजगी जाहिर की। कहा शासन को पुनः प्रस्ताव भेजा जाए।

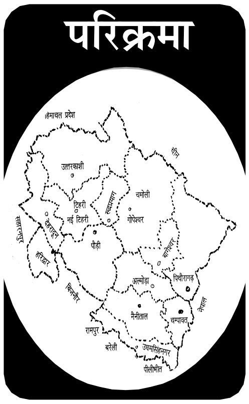

सीएमओ ने भी की है अपील

पिथौरागढ़। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. एएएस नबियाल ने जिले के ग्रामीणों से जंगली मशरूम न खाने की अपील की है। पत्रकारों से बातचीज में उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में कई गांवों में लोग जंगली मशरूम की सब्जी खाते है। इसमें से अधिकांश मशरूम जहरीला होता है। इसका असर देर से होता है और खतरा बना रहता है। इस बार दो लोगों की मौत हो गई जिसका बेहद दुख है। इसके बाद मुनस्यारी के कुछ गांवों में मशरूम और लिंगुण ी सब्जे खाने बीमार पड़े। समय पर इलाज मिलने से उनकी जान बच गई। इसी प्रकार धारचूला के चार लोगों का जिला अस्पताल में इलाज कराया गया।

सीएमओ ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग लोगों को लगातार जागरूक कर रहा है। जिस तरह से जंगली मशरूम की सब्जी खाने के कारण लोगों के बीमार होने के मामले सामने आ रहे हैं उसे देखते हुए लोगों को जागरूक होने की जरूरत है। उन्होंने लोगों से जंगली मशरूम का सेवन न करने की अपील की है।

रामकथा का.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

था कि आप इस आश्रम में पधारेंगे। मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ और मैंने आपके लिए फल-मूल इकट्ठे कर रखे हैं' शायद बेरों वाला प्रसंग इसी आधार पर बाद में विकसित हुआ। इसके बाद उन सिद्धा शबरी ने राम लक्ष्मण को वह सुन्दर मतंग आश्रम दिखाया और फिर प्रसन्नचित्त वे राम के सामने ही अग्नि प्रज्जलित कर उसमें प्रवेश कर गई।

अब बताइए इस पूरी कहानी में क्या खास बात है? रामायण, महाभारत और पुराणों में ऐसे सैकड़ों प्रसंग मिल जाएंगे, जहाँ भक्तजन अपने प्रभु के किसी रूप के आगे लोटपोट होते और प्राणत्याग करते रहे हों। पर ऊपर से सामान्य नजर आने वाले इस प्रसंग का भारत की सभ्यता के विकास में एक खास महत्व है और इसे हम केवल ऐलूष और शम्बूक ऋषि के चरित्र के साथ जोड़कर देखना चाहते हैं।

ऐसा लगता है कि भारत की सभ्यता के विकास के क्रम में राम के आसपास का समय काफी महत्वपूर्ण है। अब तक देश में मुख्यधारा सिर्फ एक ही बह रही थी, यज्ञ की धारा। वही विद्वान ऋषिपद को पा सकता था जो मन्त्र रचना करे और उनके मन्त्रों का यज्ञों में बकायदा प्रयोग- जिसे यज्ञ की तकनीकी भाषा में विनियोग कहते हैं- हो सके। बेशक एक धारा दूसरी भी चल रही थी, अध्यात्म धारा जिसे प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव ने प्रवर्तित किया, उनके पुत्र जड़ भरत ने आगे बढ़ाया, दीर्घतमा ममातेय जैसे कुछ महाकवियों के 'अस्म वामीय' सरीखे कुछ सूक्तों में उसका विकास भी हो रहा था, पर जिसका वास्तविक विकास, वेदों के सन्दर्भ में, पाँच हजार साल पहले हुआ हुए कृष्ण के समय के आसपास हुआ, जब पुरुषसूक्त, कालसूक्त, हिरण्य गर्भ, सृष्टि सूक्त जैसे विशिष्ट दार्शनिक सूक्तों की रचना हुई। पर छह हजार साल पहले हुए राम के समय तक भारत में यज्ञ की मुख्यधारा और अध्यात्म की उपधारा के साथ-साथ तप और भक्ति की एक नई धारा का प्रवर्तन भी हो चुका था। सरस्वती नदी के किनारे कवष ऐलूष ने जिस हठयोग से ब्राह्मणों को विवश किया वह हम देख चुके। दण्डकारण्य में शम्बूक ऋषि ने शरीर को कठोर तप का माध्यम बनाकर पूरी व्यवस्था की नींद हराम कर दी, यह भी हम देख चुके। इधर, वाल्मीकि शबरी को सिद्धा, श्रमणी कह रहे हैं और राम उनसे पूछ रहे हैं कि उनके नियम कैसे चल रहे हैं, तप कैसा चल रहा है। दण्डकारण्य में राम ऐसे अनेक मुनियों से मिले जो तपस्या करने की कई तरह की नई विधियों को ईजाद कर अपने हिसाब से कई तरह से तपश्चर्या में लीन थे। यह सब देखकर लगता है कि यज्ञ के साथ और मन्द स्वर में सुनाई दे रही अध्यात्म वाणी के साथ तपस्या और भक्ति का एक नया दौर काफी तेजी से शुरू हो चुका था। आप चाहें तो तप और भक्ति को अलग-अलग धाराएँ मान सकते हैं, पर दोनों के एक हो जाने में कोई लम्बा रास्ता नहीं तय करना पड़ता। फिर भी अगर दोनों को अलग मानना हो तो आप शम्बूक को तपस्या का और शबरी को भक्ति का मूर्तिमान रूप मानकर नए प्रवर्तकों में शामिल हो सकते हैं।

शबरी ने जिस भक्ति का प्रदर्शन किया है, उसका एक रूप किष्किन्धा काण्ड में हनुमान विकसित कर रहे थे जिसमें दास्य और ज्ञान का अद्भुत समावेश था तो दूसरी ओर लंका में विभीषण उसे नामजप द्वारा एक नया आयाम दे रहे थे। शबरी की भक्तिधारा में प्रपत्ति यानी शरणागति शिखर पर है, जो इस महानारी द्वारा राम की इतनी लम्बी प्रतीक्षा में व्यक्त होती है। मतंगमुनि अपना आश्रम छोड़कर चले गए, शेष सारे मुनि भी आश्रम छोड़ गए, पर चूँकि कह गए कि राम एक दिन इधर आएंगे, सो श्रमणी शबरी ने राम की प्रतीक्षा करनी शुरू कर दी। प्रतीक्षा में वे तंग आकर कभी भी वैसे ही अग्नि में प्रवेश कर सकती थी जैसा उन्होंने राम के सामने किया। पर शबरी ने उस प्रतीक्षा को अपना लिया जिसके आखिरी छोर का इन्हें भी पता नहीं था। मतंग आश्रम अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध था और राम भी उस आश्रम का सौन्दर्य देखने उधर आए थे।

राम आएँ तो उस आश्रम को देखकर निराश न हों, इसलिए सिद्धा श्रमणी शबरी ने आश्रम का सौन्दर्य पूरे परिश्रम से बरकरार रखा और जैसे ही राम वहाँ आए, उनकी सेवा शुश्रूषा कर उन्हें तुरन्त सारा आश्रम दिखाया, यह बताते हुए कि कौन ऋषि कहाँ क्या-क्या करते थे। हमारे इतिहास में भक्ति के इस रूप का पहला उदाहरण है श्रवणी शबरी और इसलिए आर्श्चर्य नहीं कि इस देश की सबसे लोकप्रिय प्रेरक कथा रामकथा का अभिन्न अंग हमेशा के लिए बन चुक है।

(साभार नवभारत टाइम्स)

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव परिणाम के बाद भी धुंआ बराबर है

परिणामों ने उधेड़ कर रख दी है परतें

उत्तराखण्ड में सामान्य त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के परिणाम के बाद धुंआ अभी बराबर छाया है। अप्रत्याशित परिणामों को लेकर चर्चाएं थम नहीं रही हैं। असल में परिणामों ने नेताओं की परतें उधेड़ कर रख दी। साथ ही ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष पद के लिये दांव-पेंच शुरू हो चुके हैं।

हल्द्वानी में सबसे चर्चित बेला तोलिया का हारना है। हल्द्वानी की रामड़ी आनसिंह जिला पंचायत सीट के लिये सांसद, विधायक, मंत्री, पूरी भाजपा उनके साथ सड़क पर घूम रही थी और धनबल भी था लेकिन उन्हीं की पार्टी से बगावत कर मैदान में उतरी युवा छवि काण्डपाल बोरा ने बुरी तरह पराजित कर दिया। इसी प्रकार गौलापार में आमखेड़ा चोरगलिया जिला पंचायत सीट पर पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य अर्जुन बिष्ट की पत्नी लीला ने भाजपा नेता मुकेश बेलवाल की पत्नी अनीता को बड़े अन्तर से परास्त किया। सल्ट विस के विधायक महेश जीना के पुत्र की हार की चर्चा भी थम नहीं रही है। कमल जीना बीडीसी सीट हारे। कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या की बहू ने सुनाड़ी क्षेत्र पंचायत सीट पर जीत दर्ज की।

खटीमा विधानसभा में पंचायत चुनाव के परिणामों की धुन अभी और तेज है क्योंकि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के गृह क्षेत्र होने से सबका जोर इधर है। विधायक भुवन कापड़ी ने तो मतगणना में अनियमितता का आरोप लगाया। जिला पंचायत की बिगराबाग सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी हीरा मुंडेला ने भाजपा समर्थित रीतू जेठी को हराया। इस सीट पर कांटे की टक्कर थी और माना जा रहा था कि जेठी का दबदबा रहेगा। गांगला जिला पंचायत सीट पर निर्दलीय रीता कफलिया ने जीत दर्ज कर सबको चौंकाया है।

पिथौरागढ़ की छाना जिला पंचायत सीट पर निवर्तमान जिला पंचायत प्रमुख दीपिका बोहरा का दबदबा बना हुआ है। इस बार भी वह भारी मतों से सफल रहीं। भड़कटिया सीट पर विधायक विशन सिंह चुफाल की पुत्री दीपिका चुफाल की जीत हुई। इस सीट पर विधायक चुफाल और कांग्रेस विधायक मयूख महर की प्रतिष्ठा दांव पर थी। मयूख का समर्थन रेखा धामी को था। धारचूला विधायक हरीश धामी का भतीजा संदीप धामी मदकोट ग्राम पंचायत सीट पर जीता वहीं बीडीसी के लिये खड़ी बहू पिंकी को हार का मुंह देखना पड़ा।

चम्पावत की अधिकांश सीटों पर भाजपा का दबदबा रहा है। पार्टी क्षेत्र में पूर्व ब्लाक प्रमुख लक्ष्मण सिंह लमगड़िया का जबर्दस्त झटका लगा है। उनके पुत्र , भतीजा और दो बहुएं चुनाव हार गये। भाजपा से दो बार के विधायक और दबंग नेता पूरन सिंह फर्त्याल जिला पंचायत सदस्य के चुनाव में बेटी सुष्मिताको नहीं जिता पाए। इससे उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा को जबर्दस्त झटका लगा है। लोहाघाट क्षेत्र में किंग मेकर की भूमिका में रहने वाले पूरन फर्त्याल भाजपा से टिकट न मिलने से पहले ही नाराज थे।

पूर्व प्रमुख लमगड़िया को झटका। के पुत्र, भतीजा, दो बहुएं हारीं

पूरन फर्त्याल की राजनीति को जबर्दस्त झटका लगा है

मंत्री, सांसद, विधायक, पार्टी संगठन, धनबल कुछ काम नहीं आया

सल्ट के विधायक जीना के पुत्र की हार की चर्चा भी है

खटीमा में खूब हुई भाजपा-कांग्रेस और लगे आरोप

विधायक चुफाल की पुत्री दीपिका और जिपं प्रमुख बोहरा का दबदबा

कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या की बहू मीनाक्षी बनी बीडीसी सदस्य

विधायक हरीश धामी का भतीजा संदीप जीता और बहू हारी

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

सरकार! सुध हो। भारी बरसात और भूस्खलन से मार्ग टूटे और पुल बहे

बोना, तोमिक, गोल्फा में मुश्किलें बढ़ी

मानसरोवर मार्ग में मलबा बना है रोड़ा

रिलकोट गरारी मामले में कार्रवाई हो

मल्ला जो. वि. समिति ने पत्र लिखा

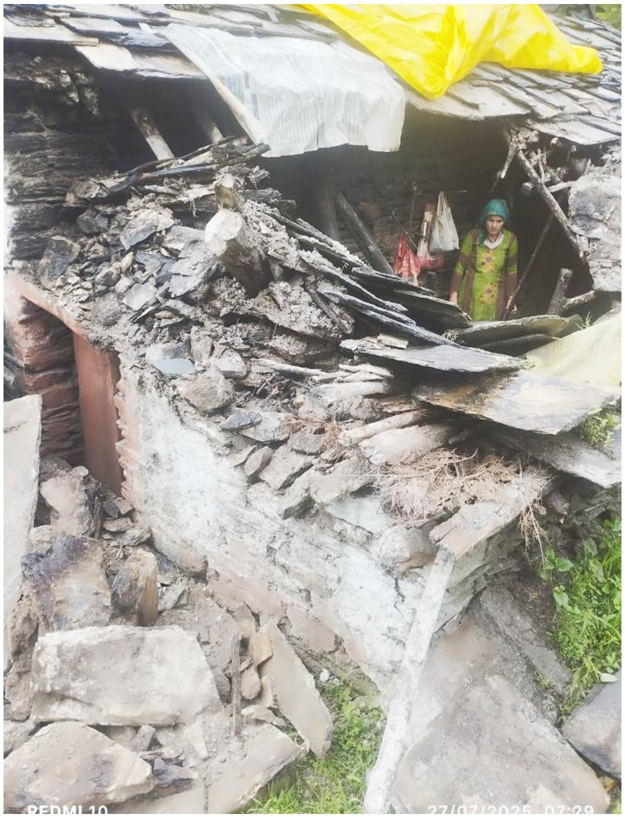

भारी बरसात के कारण बंगापानी तहसील के दूरस्थ गाँव बोना तोमिक और गोल्फा के 500 से अधिक परिवारों की मुश्किलें बढ़ चुकी हैं। गाँवों को जोड़ने वाली मदकोट-बोना सड़क लम्बे समय से बन्द है, अब इन गाँवों को जोड़ने वाला पैदल रास्ते पर बना लकड़ी का पुल बह गया है। जिला मुख्यालय से से डेढ़ हजार की आबादी क्षेत्र का सम्पर्क कटा हुआ है।

तवाघाट-लिपुलेख सड़क (कैलास मानसरोवर यात्रा मार्ग) में मलबा आने से बराबर दिक्कत हो रही है। बीआरओ के अधिकारियों का कहना है कि बारिश होने और ऑपरेटर के चोटिल होने से सड़क खोलने में बिलम्ब हो रहा है।

अत्यधिक बरसात में सीमान्त के अनेक ग्राम सम्पर्क से कटे हैं, इस बारे में मल्ला जोहार विकास समिति ने स्थानीय प्रशासन सहित महामहिम राष्ट्रपति तक को पत्र भेजते हुए सीमा क्षेत्र पर विशेष सतर्कता के लिये कहा है। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने बताया कि मुनस्यारी बाजार तक बरसाती पानी के साथ मलबा हा गया। मालूपाती ग्राम में कई मकान दरक गये और घरों में सामान को नुकसान हुआ है। उन्होंने शासन-प्रशासन से अनुरोध किया है कि नुकसान का जायजा लेते हुए आर्थिक सहायता आपदा राहत कोष से भुगतान करवाया जाए। जिन मोटर सड़क, पैदल मार्गों को नुकसान हुआ है उसमें तुरन्त मरम्मत कार्य हों।

इसके अलावा उन्होंने रिलकोट मल्ला जोहार में गरारी की रस्सी टूटने के मामले में कार्रवाई की मांग की है। कहा कि इसमें चार लोगों की जान बच गई। इसमें एक गोरी नदी में गिरने से घायल हो गया था। इस नदी के ऊपर झूला पुल निर्माण के लिये मल्ला जोहार विकास समिति के द्वारा कई सालों से शासन-प्रशासन से अनुरोध किया जा रहा है, जिसमें झूला पुल निर्माण स्वीकृत किया गया परन्तु पिछले दो वर्षों में ही झूला पुल निर्माण का कार्य लोनिवि नहीं कर सका। साथ ही गरारी की देखभाल न होने रस्सी टूटी।

स्वतंत्रता दिवस हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
बी.एस. बरफाल-श्रीमती नन्दा बरफाल
सुरभि कालौनी, फेस-2 मल्ली बमौरी, हल्द्वानी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION || LIVE MUSIC || HOMELY FOOD || BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

परसीलाल वर्मा
नाकुरी पट्टी
धरमघर

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

नवराज सिंह जंगपांगी
नई आबादी
पूरनपुर नैनवाल, पो०लामाचौड़
हल्द्वानी

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com